International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-1 Jan-Feb-2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन''

शोध निर्देशक
डॉ राम प्रताप सैनी
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/688

सहशोध निर्देशक
डॉ. राजेन्द्र झाझड़िया
पंजीयन सं. JJT/2K9/EDU/0571

सुरेश कुमार
पी–एच.डी. (एज्यूकेशन) (छात्र)
पंजीयन सं. 20119004
जे.जे.टी.विश्वविद्यालय,
चुड़ेला, झुंझुनूं

प्रस्तावना –

मानव भूतल पर महत्त्वपूर्ण प्राणी है क्योंकि वह प्रकृति का एकमात्र दास न होकर उसका एक मुख्य अंग है। वह पार्थिव वस्तुओं से प्रभावित होकर उन्हें भी अपने कार्यों से प्रभावित करता है, उनमें यथोचित परिवर्तन लाता है और प्रकृति को अपने अनुकूल बना लेता है। कई बार वह उससे समझौता भी कर लेता है और अपने जीवन को वातावरण के अनुसार ही ढ़ाल लेता है। यदि पृथ्वी के धरातल पर रहने वाले विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के निवासियों पर दृष्टिपात किया जाए तो स्पष्ट होगा कि उनमें समानता न होकर अनगिनीत विभिन्नताएँ मिलती हैं। उष्ण, शीत अथवा समशीतोष्ण क्षेत्रों के निवासियों की शारीरिक रचना, जातीय गुण, कार्यक्षमता, योग्यता, आचार–विचार, धार्मिक विश्वास आदि में अनेक भिन्नताएं मिलती हैं। इन विभिन्नताओं का कारण वह वातावरण है जिसमें मानव रहता है। मानव अपने भौतिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित रहता है, उसके प्रति क्रिया–प्रतिक्रिया करता है व समन्वय या संघर्ष भी करता रहता है। मानव का अपने वातावरण के साथ अद्‌भुत सामंजस्य होता है, वह विभिन्न रीतियों से अपने जीवन को पूर्णतया या आंशिक रूप से प्रकृति के भौतिक रूपों और जीवधारियों के साथ घुला–मिला लेता है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में मानव अपने वातावरण से अनुकूलन (adaptation) और सामंजस्य (adjustment) स्थापित कर उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन (modification) करता है। मानव समूह अपने भौतिक वातावरण में समन्वय स्थापित कर स्वयं द्वारा अर्जित अनुभव और प्रादेशिक अर्न्तसम्बन्धों का पूरा लाभ उठाता है।

जहाँ मूल्यों की मात्रा में कमी होती है या उनके प्रति उदासीनता होती है, उस स्थिति में विद्यार्थियों में मूल्यों के गुणों का अभाव दृष्टिगोचर होगा और ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों का व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण, गौरवमय नहीं हो पायेगा। इसके लिए उनके माता-पिता को प्रारम्भिक अवस्था से ही उनमें मानवीय मूल्यों का विकास करना चाहिए।

विभिन्न विद्वानों द्वारा इन भौगोलिक क्षेत्रों के भौतिक-परिवेश, जलवायु, वातावरण आदि का मानव जीवन पर कितना गहन प्रभाव पड़ता है, इस पर विविध मत/टिप्पणियों का अध्ययन कर एवम् मरू, मैदानी व पहाड़ी क्षेत्र की जलवायु जैसी महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता के मन में निम्नलिखित समस्या पर शोध करने का विचार प्रस्फुटित हुआ है कि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्य किस स्तर के हैं तथा इनमें अन्तर पाया जाता है। इन सभी जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध करने का निश्चय किया।

अध्ययन का महत्व :-

मूल्य किसी भी समाज का मेरुदण्ड होते हैं। इनके अभाव में समाज का ढाँचा खड़ा नहीं रह सकता है। प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक संस्कृति के कतिपय अपने मानदण्ड होते हैं, समाज में रहने वाला प्राणी इन मानदण्डों को मानने के लिये बाध्य रहता है ताकि एक नैतिक व्यवस्था बनी रहे। प्रारम्भ में ये प्रतिमान व्यक्तिगत-जीवन में उद्‌भुत होते हैं, कालान्तर में ये सामाजिक-जीवन में व्याप्त होकर व्यापक रूप ग्रहण कर लेते हैं और समाज के मूल्य बन जाते हैं। समाज उन्हें ग्रहण करके सामूहिक स्वीकृति प्रदान कर देता है, तब व्यक्ति उनके अनुसार अपने आचार-विचार को निश्चित करने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार मूल्यों को हमारे आचार-विचारों का सामुदायीकरण कहा जा सकता है और यह मूल्य ही आदर्श बनकर हमारे मानसिक-जीवन को प्रेरित करते हैं। मूल्य स्थापित हो जाने पर ही हम कहते हैं कि क्या उचित है, क्या अनुचित और इसके आधार पर हम दो वस्तुओं की उत्कृष्टता या निकृष्टता की तुलना कर सकते हैं।

वर्तमान में समाज में मूल्यों का हनन होता जा रहा है, व्यक्ति स्वार्थी बन गया है। विद्यार्थियों में जीवन-मूल्यों जैसे- दया, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, समर्पण, सहयोग, अहिंसा, कर्तव्यपरायणता आदि का विकास हो जिससे वे आदर्श नागरिक बन सकें। अतः इस हेतु गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए मूल्यों की शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिये। गुणवत्तायुक्त शिक्षा विद्यार्थियों के उत्थान के लिये है। अतः

विद्यार्थियों को अपना लक्ष्य निर्धारित कर तन-मन से शिक्षा ग्रहण करनी है। इसके लिये उन्हें टी.वी. संस्कृति से मुक्त होकर 'अध्ययन संस्कृति' अपनानी होगी, सद्साहित्य की ओर झुकाव करना होगा एवं विद्यालय में नियमित उपस्थित होना होगा। उन्हें अपने अर्जित ज्ञान के पुनर्बलन और आत्मीकरण के लिये आत्मविश्वास के साथ अध्ययन व अभ्यास करना होगा ताकि परीक्षा परिणाम उत्कर्षोन्मुख रह सके। वस्तुतः शिक्षा किसी भी राष्ट्र का मेरुदण्ड होती है, वह अतीत की उपलब्धियों, वर्तमान का यथार्थ एवं भविष्य की आलोकमय चेतना की संवाहक होती है। शिक्षा राष्ट्र रूपी शरीर का हृदय भी है, जिसके द्वारा ज्ञान रूपी स्वस्थ रक्त का संचार किया जाता है। ऐसी स्थिति में हमारे आदर्श जीवन-मूल्यों के विकास, संरक्षण एवं हस्तान्तरण में यह अपनी सर्वोत्तम भूमिका प्रस्तुत कर सकती है। वर्तमान की शिक्षा पद्धति में जीवन मूल्यों की शिक्षा को स्थान मिले; जीवन का वह मूल्य, जो हमें आत्मीयता प्रदान करे; मूल्य वह, जो आत्मचेतना को बलवती बनाये; व्यक्तिगत उत्थान के साथ समाज की उन्नति हेतु भी कार्य करे। शिक्षा जीवन मूल्यों को निर्धारित कर उनका हस्तान्तरण विद्यार्थियों में कर सकती है। सकारात्मक सोच एवं मूल्यों में आस्था का दीप अवश्य प्रज्वलित रहना चाहिये। शिक्षक एवं विद्यार्थी ही पद्धति के वाहक होते हैं, अतः अन्तिम रूप से शिक्षक को इस नवीन चुनौती हेतु तैयार करना ही होगा। समग्र समाज, उससे जुड़े सरोकार, आदर्श परम्पराएँ, भविष्य की आवश्यकताएँ भी शिक्षा चिन्तन के विचारणीय पक्ष होते हैं, जिनमें जीवन-मूल्यों के विकास का सामर्थ्य होता है।

उपर्युक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन'' करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है। अतः माध्यमिक स्तर के अध्येताओं की समस्याओं का अध्ययन कर तथा उन पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन कर संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

समस्या कथन :-

''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :-

1. विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्यों का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :-

१ण् विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं हेाता है।

अध्ययन का परिसीमन :–

1. शोध का क्षेत्र राजस्थान राज्य रहेगा।
2. राजस्थान राज्य को 3 भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर मरू क्षेत्र (बीकानेर संभाग), मैदानी क्षेत्र (भरतपुर संभाग) व पहाड़ी क्षेत्र (उदयपुर संभाग) को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।
3. उक्त तीनों क्षेत्रों से माध्यमिक स्तर के 1200 विद्यार्थियों (600 बालक + 600 बालिकाएं) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। प्रत्येक क्षेत्र से 400-400 विद्यार्थियों को (200 बालक +200 बालिकाएं) चयनित किया गया है।

शोधविधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

मूल्य मापनी :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता द्वारा जी.पी.शैरी एवं आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित मापनी को आधार माना गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं C.R. Value की गणना की जायेगी।

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

सारणी संख्या – T.IV.1

विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

न्यादर्श	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात मान (C.R..Value)	सार्थकता स्तर	
					.05	.01
छात्र	150	11.46	2.99	1.82	सार्थक अन्तर नहीं हैं।	
छात्रा	150	11.66	3.12			

($df=N_1+N_2-2=150+150-2=298$)

विश्लेषण :–

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से कम है। इस आधार पर परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। अर्थात् विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

हिन्दी संदर्भ साहित्य

1. मूल्य आधारित अध्यापक शिक्षा पर राष्ट्रीय सेमीनार (21 से 23 सितम्बर, 2003)
2. मौर्य, डी.एस. ''भौगोलिक शब्दकोश'', प्रयाग पब्लिकेशन, इलाहाबाद
3. युगनिर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा अप्रैल 2007, ''प्रतिभा पाई नहीं कमाई जाती है''
4. रेंटजेल, एफ. ''मानव प्रजाति का इतिहास'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. लोढ़ा, डॉ.महावीरमल–''नैतिक शिक्षा'',राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (2007)
6. लोढ़ा,ललितकुमार; शर्मा, डॉ.बी.एल.''भूगोल शब्दकोश'' जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर
7. वालिया, डॉ. शिरीष; शारया, कु. दीपिका, उज्ज्वल, डॉ. मधुप ''मूल्योन्मुखी शिक्षा पर राष्ट्रीय सेमीनार''